श्रीअन्नपूर्णाष्टकम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल घोरपावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ।
प्रालेयाचल वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १॥

नानारत्न विचित्र भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार विलम्बमान विलसत् वक्षोज कुम्भान्तरी ।
काश्मीरागरु वासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ २॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थ निष्ठाकरी
चन्द्रार्कानल भासमान लहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्य समस्त वाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३॥

कैलासाचल कन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थ गोचरकरी ओङ्कार बीजाक्षरी ।
मोक्षद्वार कपाट पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४॥

दृश्यादृश्य विभूति वाहनकरी ब्रह्माण्ड भाण्डोदरी
लीला नाटक सूत्र भेदनकरी विज्ञान दीपाङ्कुरी ।

श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणी नील समान कुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६॥

आदिक्षान्त समस्त वर्णनकरी शम्भो स्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७॥

देवी सर्व विचित्र रत्न रचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामे स्वादु पयोधरा प्रियकरी सौभाग्य माहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८॥

चन्द्रार्कानल कोटि कोटि सदृशा चन्द्रांशु बिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्नि समान कुण्डलधरी चन्द्रार्क वर्णेश्वरी ।
माला पुस्तक पाश साङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।

दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्कर प्राण वल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२॥

॥ इति श्रीशङ्करभगवतः कृतौ अन्नपूर्णा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥